

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

04-जुलाई-2014 14:51 IST

माता वैष्णोदेवी कटरा-उधमपुर रेल लाइन के शुभारम्भ के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के भाषण का मूल पाठ

एक तरफ श्री अमरनाथ यात्रा चल रही है, बड़ा पवित्र माहौल है दूसरी तरफ रमजान का पवित्र महीना चल रहा है और तीसरी तरफ आज माता वैष्णो देवी के चरणों में भारत भर से भक्तों को लाने की सुविधा प्रदान करने का एक मंगल प्रारंभ हो रहा है। एक प्रकार से सब ओर एक पवित्रता का माहौल है और पवित्रता के माहौल में इस मंगल कार्य का आरंभ हो रहा है। प्रदेश के माता वैष्णो देवी के चरणों में आने वाले करोड़ों-करोड़ों भक्तों को शुभकामनाएं देता हूँ और आज ये सुविधा सिर्फ जम्मू-कश्मीर के लिए सुविधा नहीं है और न ही यह सिर्फ जम्मू-कश्मीर को भेंट है, यह भेंट पूरे हिन्दुस्तान को है, सवा सौ करोड़ देशवासियों को है जो जम्मू-कश्मीर आने के लिए लालायित रहते हैं, जो माता वैष्णो देवी के चरणों में आने के लिए आतुर रहते हैं। ऐसे कोटि-कोटिजनों के लिए ये सुविधा है और उनके चरणों में ये समर्पित करते हुए मैं गर्व महसूस कर रहा हूँ और उनको मंगल कामनाएं देता हूँ। ये रेल सुविधा आज प्रारंभ हो रही है।

मैंने रेल मंत्री को सुझाया था कि दिल्ली से कटरा तक की जो सुविधा है और आगे चलकर और स्थानों से भी जुड़कर देश के भिन्न-भिन्न कोने से यात्रियों को कटरा तक लाने का जो प्रबंध हो रहा है। इस ट्रेन को “श्री शक्ति एक्सप्रेस” के रूप में जाना जाए ताकि माता वैष्णो देवी के चरणों में हम जा रहे हैं इसकी अनुभूतियात्रियों को लगातार होती रहे। मैं ‘माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड’ का भी अभिनंदन करना चाहता हूँ। गवर्नर साहब का भी अभिनंदन करना चाहता हूँ कियहां रेलवे स्टेशन पर भी यात्रियों के लिए आवश्यक आई-कार्ड निकालने की सुविधाओं का प्रबंध हुआ है। टैक्नोलॉजी का प्रबंध हुआ है और इसीलिए हिन्दुस्तान के किसी भी कोने से आने वाले यात्री के लिए ये बहुत सुनिश्चित हो जाएगा यात्री का समय न खराब होते हुए उसके आगे की यात्रा के लिए जो भी प्रबंध होना चाहिए उसके लिए पूरी व्यवस्था मिलेगी, पूरा मार्गदर्शन मिलेगा।

जब विकास होता है तो कभी-कभार ऐसा लगता है कि वहां पर ये हुआ तो मेरा क्या होगा जैसे मुख्यमंत्री जी ने जम्मू के लोगों की चिंता का जिक्र किया। मैं अनुभव से कह सकता हूँ कि जम्मू के विकास को कभी कोई रुकावट नहीं आएगी। जब सुविधाएं बढ़ती हैं तो लोग भी अपने समय का सदुपयोग और जगह पर जाने के लिए करते हैं और इसीलिए जो सीधा कटरा आएगा वो जम्मू गए बिना जाएगा नहीं ऐसा मैं नहीं मानता और इसलिए जम्मू की विकास यात्रा और अधिक क्वालिटी की बन पाएगी, ऐसा मेरा पूरा विश्वास है और साथ-साथ जम्मू-कश्मीर की विकास यात्रा में कटरा का जुड़ना, कटरा का सेंटर स्टेज पर आना, आने वाले 10 साल की आप कल्पना कीजिए कटरा इतनी तेजी से विकास करेगा, इतनी तेजी से विकास करेगा जो पूरे जम्मू-कश्मीर के विकास के अंदर एक नया योगदान करने वाला एक आर्थिक प्रभुत्विका केन्द्र बन जाएगा। जब व्यवस्था विकसित होती है और विकास के केन्द्र बिंदु में हमेशा इन्फ्रास्ट्रक्चर का सबसे बड़ा महत्व होता है। जैसे ही इन्फ्रास्ट्रक्चर बना आप मानके चलिए कि उसके अगल-बगल में व्यवस्थाएं विकसित होना शुरू हो जाएगी। मुझे अभी बताया जा रहा था कि ट्रेन तो अभी आज शुरू हो रही है लेकिन स्टेशन के अगल-बगल व्यापारियों ने अपनी-अपनी जगह बना ली है और काम शुरू कर दिया है। अगर उनको समय दे कि विकास के अंदर कैसे फायदा उठाना, विकास को कैसे भागीदार बनाना है और इसलिए ये सिर्फ एक रेलवे है, एक यात्रा करने की सुविधा है ऐसा नहीं है।

ये एक प्रकार से विकास की जननी बन जाती है और मेरे हिसाब से जम्मू-कश्मीर को रेल से जोड़ने का अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो शुभारंभ किया है उसको हमें और आगे बढ़ाना है और आने वाले दिनों में बनिहाल तक जाने की जो व्यवस्था है उसको भी आगे बढ़ाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। इतना ही नहीं, हिन्दुस्तान में पहली बार राज्य और केन्द्र मिल करके एक नवीन व्यवस्था को आज प्रारंभ कर रहे हैं। एक प्रकार से हाइब्रिड व्यवस्था है। रेल और बस की कनेक्टिविटी को कॉम्बिनेशन बनाया गया है। अब जो लोग श्रीनगर जाना चाहते होंगे उनको रेलवे से ही रेलवे की भी टिकट मिलेगी और कटरा से बनिहाल तक जो कि जहां रेल-मार्ग नहीं है वहां बस की भी टिकट मिलेगी, कटरा वो उतरेगा, बस उपलब्ध होगी, बनिहाल पहुंचेगा, रेल उपलब्ध होगी और तुरंत वो आगे श्रीनगर पहुंचेगा। एक ही टिकट में रेल और बस दोनों का ट्रेवलिंग हो और पैसेंजर को कठिनाई न हो, यात्री को कठिनाई न हो ऐसी सुविधा का आरंभ राज्य और केन्द्र की रेल मिल करके ये दे रहे हैं और भविष्य में भी रेलवे का विकास करने के लिए केन्द्र और राज्य की पार्टनरशिप का मॉडल जितना ज्यादा विकसित होगा उतना फायदा होने वाला है।

मैं मुख्यमंत्री जी की इस बात से सहमत हूँ कि हमारे रेलवे स्टेशन ऐसे पुराने क्या होने की जरूरत है, क्यों न हिन्दुस्तान के महत्वपूर्ण स्थानों के रेलवे स्टेशन एयरपोर्ट से भी बढ़िया क्यों न हो और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, सिर्फ जम्मू वासियों को नहीं, मैं देशवासियों को विश्वास दिलाता हूँ कि हम रेलवे के विकास में, प्राथमिकता मेट्रो सिटीज़ में जम्मू जैसे महत्वपूर्ण स्टेशन को और उसके जैसे रेलवे स्टेशनों को अतिआधुनिक बनाना, एयरपोर्ट से भी रेलवे स्टेशन ज्यादा अधिक सुविधाजनक हो, ये बनाने का हमारा सपना है और ये बन सकता है। ये कोई कठिन काम नहीं है और ये इकनॉमिकली वाइबल प्रोजेक्ट बन सकता है। मैंने पिछले दिनों रेलवे के मित्रों के साथ बड़े विस्तार से समय निकालकर चर्चा की है और मैंने इसके विषय पर उनको डिटेल में प्रारूप दिया है और अब देखिए देखते ही देखते आपको बदलाव नजर आएगा और इसमें प्राइवेट पार्टी भी इनवेस्टमेंट करने के लिए तैयार हो जाएगी क्योंकिये आर्थिक रूप से एक अच्छी योजना होगी। जो सबको लाभ पहुंचाने वाली होगी एक विन-विन सिचुएशन वाला प्रोजेक्ट होगा। उस दिशा में हम आने वाले दिनों में जरूर आगे बढ़ना चाहते हैं, आज जब हम इस रेल सुविधा को दे रहे हैं यह भी मेरे लिए अत्यंत खुशी की बात है। भारत के विभिन्न राज्यों से कटरा तक छह जोड़ी रेल गाड़ियाँ तुरंत चलाई जाएगी। यानि उसका विस्तार और जगहों पर भी किया जाएगा। उसके अतिरिक्त जम्मू और उधमपुर तक चलने वाली तीनजोड़ी डेम् रेलगाड़ियों का कटरा तक, आज से विस्तार भी किया जा रहा है। जो जम्मू से चलने वाली उधमपुर वाली जो डेम् ट्रेन्स है उसको भी कटरा से जोड़ने का काम हो रहा है।

आने वाले दिनों में जम्मू-कश्मीर में विकास एक नयी ताकत कैसे बनेगी, देखिए आज का दिन एक प्रकारसे महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण इसलिए है कि आज का दिवस जम्मू कश्मीर को नयी गतिभी देने जा रहा है और आज का दिन जम्मू कश्मीर को नयी ऊर्जा भी देने जा रहा है। आज मुझे दो कार्यक्रम करने का अवसर मिला है एक इस रेल कनेक्टिविटी, जो जम्मू कश्मीर को गतिदेगा और उरी में जा करके पावर प्रोजेक्ट का उद्घाटन जो जम्मू कश्मीर को ऊर्जा देगा, विकास की ऊर्जा देगा और जम्मू कश्मीर को विकास की ऊर्जा चाहिए, जम्मू कश्मीर को विकास की गति चाहिए और एक प्रकार से आज के ये दोनों कार्यक्रम उस निमित्त बड़े महत्वपूर्ण हैं।

मैं मानता हूँ कि हमारे देश के जो हिमालयन स्टेट्स हैं, उन हिमालयन स्टेट्स के विकास के लिए एक अलग से रूप-रेखा की आवश्यकता है। सारे हिमालयन रेंजिंग स्टेट्स की कई एक समान कठिनाइयां हैं कई प्रकार की एक समान अवसर भी हैं अगर उनका एक कॉमन मॉडल विकसित किया जाएगा तो समस्याओं का समाधान भी बहुत जल्दी होगा। केंद्र के पास भी स्पष्ट विज़न होगा। राज्यों की अपेक्षाओं को समझने में केन्द्र सामर्थ्य बनेगा और हिमालयन स्टेट्स जो हैं उसके विकास में इस नयी परिधिमें हम जाना चाहते हैं और जिसका लाभ जम्मू कश्मीर को भी मिलेगा और उधर नार्थ-ईस्ट तक हिमालयन रेंज की विकास की यात्रा का लाभ उन सभी राज्यों को मिलेगा और उस दिशा में भी हम आगे बढ़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आज मैं जम्मू कश्मीर की धरती पर आया हूँ माता वैष्णोदेवी के चरणों में आया हूँ और जब चुनाव अभियान प्रारंभ किया था तब भी माता वैष्णोदेवी का आशीर्वाद ले करके गया था और आज विकास यात्रा का आरंभ कर रहा हूँ वो भी माता वैष्णोदेवी के आशीर्वाद से कर रहा हूँ और इसलिए मुझे विश्वास है कि भारत की विकास यात्रा को और अधिक शक्ति मिलेगी, और अधिक ताकत मिलेगी और अधिक सामर्थ्यवान विस्तार के साथ हम इस विकास यात्रा को आगे बढ़ाएंगे।

टूरिज्म में यात्रियों की सुविधा के साथ रेलवे एक प्रकार से Environment Friendly व्यवस्था होती है और जम्मू-कश्मीर में Environment Friendly Transportation, वो दुनिया को आकर्षित करने का कारण बनता है। हम इस मार्ग के माध्यम से विश्व के अंदर जम्मू-कश्मीर में Environment Friendly यातायात को भी बल दे रहे हैं यह अपने आप में एक अच्छे प्रयोग के रूप में हम दुनिया के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं।

और हिमालयन में जितना विकास हम करना चाहेंगे, वो Environment Friendly विकास हो सकता है। उसको हम बल भी दे सकते हैं, उसकी सुरक्षा करते हुए यात्रियों की सुविधा भी बढ़ा सकते हैं, Environment की सुरक्षा भी हो, यात्रियों की सुविधा भी बढ़े, उस दिशा में हम प्रयास करते हैं, मैं जब यहां रेलवे स्टेशन का उद्घाटन करने गया, वहां का जो मैंने दृश्य ऐसा, ऐसा रेलवे स्टेशन देखने को मिलता बहुत कम है, क्योंकि ऊपर पहाड़ से नीचे स्टेशन पर जाना होता है, तो छोटी पहाड़ी पर से पूरा स्टेशन दिख रहा है, तो कितना बड़ा तामझाम है उसका दर्शन होता है। मैंने तुरंत कहा-हिंदुस्तान का ये ऐसा रेलवे स्टेशन बन सकता है कि जिसको पूरा हम सोलर रेलवे स्टेशन के रूप में कनवर्ट कर सकते हैं। इतनी संभावनाएं पड़ी हैं। रेलवे चेयमैन ने मुझे कहा मैं साहब, तुरंत इस काम को हाथ में लूंगा और मैं कटरा का पूरा रेलवे स्टेशन, देश का एक रेलवे स्टेशन, Environment Friendly Movement का एक हिस्सा... और बहुत संभावना पड़ी है, उसको जब करेंगे तो जब यात्री आएंगे और ऊपर स्टेशन पे जब जाते होंगे तो उसको देखकर कोठ भी जान लेगा कि सोलर एा उपयोग कैसे और कहां हो सकता है और मुझे विश्वास है कि बहुत जल्दी रेलवे विभाग पूरे रेलवे स्टेशन पर सोलर पैनल का उपयोग करके एक-एक इंच की जगह का उपयोग कर करके उस ऊर्जा का भी उपयोग आने वाले दिनों में कैसे कर सके उस पर प्रयास होगा और ऐसा मुझे पूरा विश्वास है।

जम्मू-कश्मीर अनेक समस्याओं से गुजरा है, अनेक कठिनाईयों से गुजरा है और एक भारत के हर नागरिक की इच्छा है, भारत के हर नागरिक का दायित्व है कि हमारा जम्मू-कश्मीर सुखी हो, समृद्ध हो। हर एक की इच्छा है और इसको पूरा करना हम सबका दायित्व है। चाहे हम शासन व्यवस्था में हो तो भी, हम शासन व्यवस्था में न हो तो भी। यह हम सबका दायित्व है। यहां के नौजवानों को रोजगार मिले, रोजगार के नए अवसर मिले। उनको नई जिंदगी जीने का अवसर मिले। मैं अभी जब कटरा स्टेशन पर बच्चे ट्रेन में जा रहे थे तो उनको मैंने पूछा कि आपमें से कितने लोग हैं जिन्होंने पहले कभी ट्रेन देखी है, कितने हैं जो ट्रेन में बैठे हैं। 21वीं सदी का पहला दशक चला गया उन बच्चों में 80 प्रसेंट बच्चों ने हाथ ऊपर किया कि हमने पहली बार ट्रेन में बैठे हैं आज। उन बच्चों के लिए आनंद का विषय है। लेकिन हमारे लिए सोचने का विषय है कि हम विकास यात्रा को कैसे चलाया कि कटरा, इतने निकट के भी बच्चों को जीवन में पहली बार रेल को देखने का 21वीं सदी आने के बाद अवसर मिला है। हमारा दायित्व बनता है कि हमारे देश के दूर-सूदूर कोने में बैठे हुए लोगों को भी विकास का लाभ मिलना चाहिए। विकास से प्राप्त सुविधाएं सामान्य मानव तक पहुंचनी चाहिए, आखिरी छोर पर बैठे हुए मानव तक पहुंचनी चाहिए। हम लोगों का प्रयास यही है और मुझे विश्वास है देश की जनता ने जो आशीर्वाद दिए हैं उस आशीर्वाद के बलबूते पर अंतिम छोर पर बैठे हुए गरीब से गरीब व्यक्तिके कल्याण में ये विकास की यात्रा आगे बढ़ेगी, विकास के नए मार्ग स्थापित होंगे और सामान्य व्यक्तिके जीवन को.. उसकी Quality of life में चेंज आएगा।

उसकी आशा अपेक्षा के अनुकूल जीवन व्यवस्था विकसित हो, उस दिशा में हम प्रयास करेंगे। मैं जम्मू कश्मीर के नागरिकों को यही संदेश देना चाहता हूँ, अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जिस यात्रा को प्रारंभ किया है, उस यात्रा को हम आगे बढ़ाना चाहते हैं और हमारा मकसद राजनीतिक जय-पराजय वाला नहीं होता है। हमारा मकसद होता है जम्मू-कश्मीर के हर नागरिक का दिल जीतना है और मैं जम्मू-कश्मीर के नागरिकों का दिल जीतना यही मेरी प्राथमिकता है और यह प्राथमिकता उसी को विकास के माध्यम से करना है यहां के लोगों के कल्याण के माध्यम से करना है। यहां के लोगों की भलाई के माध्यम से करना है और मुझे विश्वास है इस स्वप्न को हम बहुत ही जल्द, बहुत तेजी गति से पूरा करते जाएंगे। इसी सद्भावना के साथ फिर एक बार यह श्री शक्ति एक्सप्रेस राष्ट्र को समर्पित कर रहा हूँ। माता वैष्णो देवी के चरणों में आने वाले कोटिकोटिभक्तों को समर्पित करता हूँ और जम्मू-कश्मीर के टूरिज्म के विकास के लिए यह यात्रा अहम भूमिका अदा करेगी। जम्मू-कश्मीर के टूरिज्म को बहुत बल मिलेगा। जम्मू-कश्मीर के विकास को बहुत बल मिलेगा। इस शुभकामनाओं के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद।

अमित कुमार / शिशिर चौरसिया, रजनी, तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

21-अगस्त-2014 10:31 IST

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा नागपुर में नागपुर मेट्रो, पारदी ग्रेड सेपरेटर तथा राष्ट्रीय राजमार्ग- 6 पर बनने वाले फ्लाईओवर के शिलान्यास समारोह पर दिए गए भाषण का मूल पाठ

मैं सबसे पहले आप सबसे क्षमा चाहता हूँ। मुझे आने में विलंब हुआ। आया तो समय पर था, लेकिन वरूण देवता की इतनी कृपा हो गई, कि हमारे हेलीकाप्टर के टेकआफ में विलंब हुआ, और इसके कारण इससे पूर्व के कार्यक्रम में भी जाने में विलंब हो गया और उसके कारण आप लोगों को प्रतीक्षा करनी पड़ी। लेकिन प्रतीक्षा के बाद लगता है मौसम ज्यादा अच्छा हो गया।

दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है। भारत आजाद हुआ, उसके बाद जो देश आजाद हुए, छोटे-छोटे देश आजाद हुए। लेकिन प्रगति के नाम पर, विकास के नाम पर वे हिन्दुस्तान से भी आगे निकल गए। हम पीछे क्यों रह गए? और क्या सवा सौ करोड़ देशवासियों का भारत पीछे रह गया। हम पिछड़ गए, इसकी पीड़ा है क्या ? अगर हमारे दिल में ये पिछड़ेपन की पीड़ा न हो, कसक न हो, देश को आगे ले जाने का मकसद न हो और सवा सौ करोड़ देशवासियों का अगर ये सामूहिक सपना न हो, तो देश कभी आगे नहीं बढ़ सकता। दुनिया के जितने देश आगे बढ़े हैं, उस देश के हर नागरिक ने तय कर लिया है कि हम देश को बदलेंगे, हम देश को आगे बढ़ाएंगे। मिल जुल कर के प्रयास करेंगे और यही राष्ट्रीय चरित्र होता है जो देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाता है।

हिन्दुस्तान आजाद हुआ, ये देशवासियों की ताकत के कारण हुआ है। इस देश के कोटि कोटि जन कष्ट झेलने को तैयार हुए। अंग्रेजों से मुकाबला करने के लिए तैयार हुए। आजादी की ललक जगी और परिणाम ये आया कि अंग्रेजों को जाना पड़ा। 60 साल बीत गए। बिना सत्ता, बिना शासन अगर ये देशवासी हिन्दुस्तान से अंग्रेजों को भगा सकते हैं, तो सवा सौ करोड़ देशवासी हिन्दुस्तान से गरीबी को भी भगा सकते हैं। जिस मिजाज से हम आजादी का जंग लड़े, जिस त्याग, तपस्चर्या, बलिदान से हमने गुलामी को, गुलामी की जंजीरों को तोड़ा है, उसी मिजाज से, उसी ताकत से सवा सौ करोड़ देशवासी इस गरीबी की जंजीरों से भी मुक्ति का विश्वास विजय प्राप्त कर सकते हैं। हिन्दुस्तान बहुत तेजी से अर्बनाइज हो रहा है, बहुत तेजी से शहरीकरण हो रहा है। अब क्या, हम इस शहरीकरण को संकट मानें? क्या हम, इस शहरीकरण की प्रक्रिया को चुनौती मानें? कि हम इस शहरीकरण की प्रक्रिया को अवसर मानें? अब तक हमारी सोच रही देश में कि शहरीकरण को हमने संकट माना, बोझ माना, चुनौती माना। मेरी सोच अलग है। मैं शहरीकरण को एक अवसर मानता हूँ, एक आपरच्युनिटी मानता हूँ। आर्थिक विकास की संभावनाओं का केन्द्र बिन्दु मानता हूँ। और इसलिए अब तक उसके साथ व्यवहार हुआ है, शहरीकरण याने संकट। और परिणाम क्या हुआ, हमारे देश में पहले से प्लानिंग नहीं हुई है। 20 साल के बाद हमारा नगर कहां पहुंचेगा, 25 साल के बाद कहां पहुंचेगा, कितनी जनसंख्या बढ़ेगी, कितनी पानी की व्यवस्था लगेगी, कितने रोड लगेंगे, कितनी ट्रांसपोर्टेशन व्यवस्था लगेगी, इनेज किस साइज का लगेगा, यह हमारे यहां सोचा ही नहीं गया। बनता गया, बढ़ता गया। अब फिर इतना प्रेशर आया कि व्यवस्थाएं टूटने लग गईं। अगर पहले से ही हमने योजना की होती तो ये मुसीबत न आती।

आज गांव में कितना ही सुखी किसान क्यों न हो, सौ-दो सौ एकड़ भूमि हो, दो चार बेटे हों, वह भी चाहता है, एक-आध बेटा खेती में रहे, बाकी तीन बेटे शहर चले जाएं और वहीं अपना धंधा, रोजगार, नौकरी जो करना हो, करे। हर परिवार अपना एक सदस्य शहर भेजना चाहता है। शहर बढ़ने वाले हैं, शहरों की वृद्धि होने वाली है। आवश्यक यह है कि इसको हम एक अवसर मानें और अवसर मान कर के विकास का ब्ल्यू प्रिंट तैयार करें। और इसलिए नई सरकार ने कहा है, हमने बजट में भी इसकी चर्चा की है कि जिस तेजी से शहरीकरण हो रहा है, भारत को 100 स्मार्ट सिटी की जरूरत है। हर राज्य में पांच-छह, पांच-छह बड़े शहर तैयार हो जाएं, वहां पर आर्थिक प्रवृत्ति हो, वर्क टू वर्क का कंसेप्ट हो, आधुनिक टेक्नोलोजी की पूरी सुविधा हो और दो-दो, पांच-पांच लाख की बस्ती के अच्छे शहर मैनेजेबल हों, इस दिशा में जितना जल्दी हम जाएं, जाने की आवश्यकता है और एक बार यह सिलसिला शुरू हुआ, शुरू में शायद एक दो शहर बनेंगे, 5 बनेंगे, 7 बनेंगे, बढ़ता चलेगा कारवां।

उसी प्रकार से आज पूरा विश्व ग्लोबल वार्मिंग की चर्चा कर रहा है। इन्वायरामेंट की चिंता हो रही है। मानव जाति के कल्याण, प्रकृति से संवाद, प्रकृति से संघर्ष नहीं, यह भारत की विशेष संस्कृति रही है। हमारी रगों में है। हम वो लोग हैं,

जो पौधे में भी परमात्मा देखते हैं। नदी में मां देखते हैं। पर्वत में टीका नजर आता है। हम प्रकृति को प्रेम करने वाली परंपरा की विरासत के धनी हैं। हमें दुनिया के किसी देश से प्रकृति प्रेम के पाठ पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। यह हमारी रगों में है। लेकिन बदलते हुए युग में सुख सुविधा के बीच, बदलती हुई टेक्नोलोजी के युग में, ये पर्यावरण की रक्षा भी हम सबकी नैतिक जवाबदारी बनती है।

इसलिए ट्रांसपोर्टेशन के क्षेत्र में एक मास ट्रांसपोर्टेशन का कंसेप्ट आवश्यक बन जाता है। प्रकृति की रक्षा के लिए भी हर कोई अपना स्कूटर चलाये, हर कोई अपनी गाडियां चलाये तो ट्रेफिक की भी समस्याएं, पर्यावरण की भी समस्याएं। अगर उनसे मुक्ति लेनी है तो एक साथ हजारों लोग ट्रेवल कर सके, ऐसी व्यवस्थाओं को विकसित करना अनिवार्य हो गया है और उसी के तहत बड़े शहरों में, कम खर्च में, तेज गति से, पर्यावरण को नुकसान किए बिना, सामान्य से सामान्य व्यक्ति उसकी यातायात की व्यवस्था हो, उसमें से मेट्रो रेल का कंसेप्ट विकसित हुआ है।

जिस तेजी से नागपुर आगे बढ़ रहा है, पूरे विदर्भ की बड़ी आर्थिक प्रगति का केन्द्र बना हुआ है, उसको देखते हुए नागपुर में भी ये मेट्रो रेल की आवश्यकता है। और इस मेट्रो रेल की पूर्ति के लिए भारत सरकार ने नागपुर को प्राथमिकता दी है। और उस प्राथमिकता के तहत नागपुर बहुत ही जल्द, नागपुर के नागरिकों के लिए मेट्रो ट्रेन की सुविधा मिल जाएगी। इतना ही नहीं, इन दिनों मेट्रो रेलवे ये स्टैटस सिंबल भी बना हुआ है। एक प्रकार से शहर की पहचान के साथ मेट्रो रेलवे जुड़ गई है। नागपुर जब मेट्रो के मैप पर जा जाएगा तो हिन्दुस्तान के प्रगतिशील शहरों में नागपुर का भी नाम जुड़ जाएगा। आधुनिक शहर में नागपुर का नाम जुड़ जाएगा और इस दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं। और भी एक बात है, हम शहरों का विकास किस रूप में करना चाहते हैं, हम शहरों को किस दिशा में आगे ले जाना चाहते हैं। मैंने 15 अगस्त को लाले किले से एक बात की विस्तार से चर्चा की है। और मैं नागपुर के मेयर अनिल जी को बधाई देता हूं, उन्होंने स्वच्छता की ओर, नागपुर के लोगों की भागीदारी से कई नए-नए कदम उठाए हैं। मैं नागपुर पचासों बार आया हूं और हमेशा ही नाग नदी का दृश्य देख कर पीड़ा होती है। अब उसके सफाई का काम भी कर रहे हैं, यह मैंने सुना है। यह हमारी अपनी संपत्ति है।

मैंने 15 अगस्त को कहा था, 2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंति आएगी। महात्मा गांधी ने हमें आजादी दी, हम तय करें, हम महात्मा गांधी को कैसा हिन्दुस्तान देंगे। जिस महापुरुष ने हमारी इतनी बड़ी सेवा की, उस महापुरुष के सपनों के अनुरूप हम क्या करेंगे। और मैं नहीं मानता हूं, आज के युग में प्रेरणा के लिए महात्मा गांधी से बाहर देखने की जरूरत है। महात्मा जी को स्वच्छता प्रिय थी और वे स्वच्छता के आग्रही थे। क्या स्वच्छता, ये नागरिकों की जिम्मेवारी है या नहीं है।

हम सिंगापुर जाते हैं, आ कर के बातें करते हैं, यार इतना साफ-सुथरा था, कहीं गंदगी नजर नहीं आती थी। ऐसा अपने यार-दोस्तों को बताते हैं। दुबई जाते हैं, तो यार दोस्तों को बताते हैं, क्या दुबई है, कहीं गंदगी नहीं है, कोई कूड़ा कचरा नहीं है। कुछ नहीं, बहुत अच्छा लगता है। अच्छा लगता है ना, नागपुर वाले, अच्छा लगता है ना। सिंगापुर आपने साफ-सुथरा आपने साफ सुथरा देखा कि नहीं देखा, दुबई साफ सुथरा दिखता है कि नहीं दिखता है। वहां किसी को गंदगी करते हुए देखा था क्या। कोई नागरिक को कूड़ा-कचरा फेंकते देखा था क्या कोई पान खा करके पिचकारी लगाते देखा था क्या ? ये जिम्मेवारी हमारी नहीं है क्या। अगर हम तय करें, हम गंदगी नहीं करेंगे तो कोई म्यूनिसिपल कारपोरेशन की ताकत नहीं है कि नागपुर को गंदा कर सके। कोई सरकार गंदा नहीं कर सकती, अगर जनता तय करे कि हमें साफ-सुथरा रखना है।

इस मिशन के तहत एक सपना मेरे मन में चल रहा है, इस देश के 500 नगर को पसंद करके, उन पांच सौ नगर में जैसे यहां फ्लाईओवर की कल्पना हो रही है, मेट्रो की कल्पना हो रही है, हाउसिंग स्कीम्स की कल्पना हो रही है, स्मार्ट्स सिटी की कल्पना हो रही है, वह जरूरी है। वह होने वाला है, करना भी चाहिए। लेकिन मैं एक और काम की ओर ध्यान देना चाहता हूं। पूरे देश में 500 नगर , महानगर हों, छोटे नगर हों, मेट्रो सिटीज हो, नगर पालिकायें हो, पूरे देश में 500 नगर पसंद करें, और पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल पर सोलिड वेस्ट मैनेजमेंट और वेस्ट वाटर ट्रीटमेंट, इसका पूरा एक अभियान चलायें। जितना कूड़ा कचरा है, कचरे में से कंचन बनाने का बीड़ा उठायें। और नगरों की सफाई भी होगी, उसके कूड़े-कचरे में से बिजली पैदा हो सकती है। फर्टिलाइजर तैयार हो सकता है, गैस उत्पादन हो सकता है, ये वैल्यू एडिशन करें हम, कचरे कूड़े कचरे पर। और जो गंदा पानी है, उसको शुद्ध बना करके, वेस्ट वाटर ट्रीटमेंट कर के, जो नगर होते हैं, नगर के अरोस-पड़ोस के जो गांव होते हैं, वे ज्यादातर सब्जी की खेती करते हैं क्योंकि शहर में उनकी सब्जी बिक जाती है। अधिकतम बड़े शहरों के अगल बगल के गांवों में सब्जी की खेती बहुत मात्रा में चलती है। इन अरोस-पड़ोस के गांवों को ये जो आर्गेनिक फर्टिलाइजर है, ये उनको दिया जाए। और वो सब्जी पैदा करें, वे भी केमिकल फर्टिलाइजर से न करें, आर्गेनिक फर्टिलाइजर से करें और सब्जी अगर शहर में आएगी तो शहर के लोगों के स्वास्थ्य में भी लाभ होगा। शहर में से कूड़ा कचरा जाएगा, शहर के लोगों के स्वास्थ्य में लाभ होगा और स्वास्थ्य में लाभ होगा तो आरोग्य विभाग के जो खर्च होते हैं, उसमें कटौती आएगी। आर्गेनिक फर्टिलाइजर गांव में जाएगा तो केमिकल फर्टिलाइजर का उपयोग कम होगा। उसके

कारण सब्सिडी बचेगी। ये जो सब्सिडी बचेगी, उसको वाइबिलिटी गैप फंडिंग में दिया जाए ताकि नगरों की सफाई के लिए काम आए और जो वेस्ट वाटर है, वो ट्रीटमेंट करके गांव के लोगों को खेतों में वापिस दिया जाए। खेती के काम आता है वह पानी। वह एक प्रकार का वह फर्टिलाइजर बन जाता है।

आज गांव के लोगों की शिकायत रहती है हमें पानी नहीं मिलता है, शहर वाले उठा ले जाते हैं। हम ऐसी स्थिति पैदा करें कि शहर वाले गांव को पानी वापस दें। वेस्ट वाटर ट्रीटमेंट के जरिये दें। पानी उनके खेतों में उपयोग में आए, उनकी आय बढ़े। सब्जी विपुल मात्रा में शहर में आए, गरीब से गरीब व्यक्ति भी सस्ते में सब्जी खा सके, उसके लिए हेल्थ को वे फायदा देगी। एक ऐसा चक्र शहरी विकास का, मानवीय हितों को ध्यान में रख कर के एक ऐसी व्यवस्था को हम विकसित करना चाहते हैं। अगर 500 नगरों में आने वाले दिनों में बहुत बड़ी मात्रा में इस काम को करने वाले प्राइवेट लोग आए, पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल पर हो, ये विन विन सिचुएशन का काम है। और एक बार नगर में सफाई हो गई तो बीमारी का नामो निशान नहीं रहता है। शुद्ध पानी पीने को मिलता है, जीवन में बदलाव आना शुरू होता है और इन शहरों के जीवन को बदला जा सकता है।

और इसलिए भाइयों-बहनों, आज जब नागपुर शहर में शहरी जीवन की सुविधाओं के कार्यक्रम के लिए आया हूं, तब, बड़े आत्मविश्वास के साथ आपके सामने विजन में पहली बार प्रस्तुत कर रहा हूं। और मुझे विश्वास है कि जितने भी नगरपालिका की, महानगर पालिका की बाडीज हैं, चुने हुए जन प्रतिनिधि हैं, वह अपने शहर की स्वच्छता के लिए, इन व्यवस्थाओं को विकसित करने के लिए आगे आएंगे। दिल्ली में बैठी हुई सरकार भी एक विशिष्ट योजना लेकर आएगी। और ये काम करने के लिए कोई बहुत बड़ी सदियां नहीं लगती हैं। अगर पीछे लग जाएं, एक के बाद एक काम शुरू करें तो बहुत तेजी से इन कामों को किया जा सकता है। इसलिए आने वाले दिनों में शहरी विकास पर हम उस प्रकार से बल देना चाहते हैं।

शहरी गरीब- उस पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है। वह गांव छोड़ कर के शहर आता है, रोजी-रोटी कमाने आता है। अपने गरीब बूढ़े मां-बाप को मनीआर्डर भेज करके उनका जीवन चले, इसकी चिंता करने आता है। ये जो गांव से आने वाले नौजवान हैं, उनके लिए रोजगार की संभावनाएं शहरों में हमें तलाशनी पड़ेगी। इसलिए शहरों में आर्थिक प्रवृत्तियां कैसे बढ़ें, सर्विस सेक्टर को बल कैसे मिले, उद्योगों का विकास कैसे हो, और इसके हेतु स्किल डेवलपमेंट आने वाले दिनों में, वह नौजवान जो बेचारा गरीबी के कारण पांचवीं कक्षा छोड़ दी, सातवीं कक्षा में छोड़ दिया, आठवीं-दसवीं कक्षा में पढ़ाई छोड़ दी, क्या उसको ऐसे ही असहाय छोड़ा जाएगा। ये गरीब मां-बाप का बेटा जाएगा कहाँ ? अगर, उसके हाथ में हुनर हो तो पत्थर पर भी लात मार कर के रोजी-रोटी कमाने की वह ताकत पैदा हो जाती है। और इसलिए शहरी गरीबों को, स्किल डेवलपमेंट का अवसर मिले, उसके हाथ में हुनर हो, वह अपने आप रोजी-रोटी कमाना शुरू हो जाएगा।

आज शहरों में एक तरफ बेरोजगार लोग हैं, और दूसरी तरफ आपको घर में प्लंबर चाहिए, प्लंबर नहीं मिलता, ड्राइवर चाहिए, ड्राइवर नहीं मिलता है, कुक चाहिए, कुक नहीं मिलता है, चौकीदार चाहिए, चौकीदार नहीं मिलता है। एक तरफ बेकार लोग हों, और दूसरी तरफ आपकी आवश्यकता की पूर्ति न हो, ऐसी कैसी व्यवस्था? और इसलिए जो आवश्यकता के अनुसार, इन नौजवानों का स्किल डेवलपमेंट हो, ताकि उनको रोजगार मिल जाए, वह अपने पैरों पर खड़ा हो जाए, बलबूते पर खड़ा हो जाए, और इसलिए रोजगार की संभावनाओं को, शहरों में गरीब जो रहते हैं, उनके लिए बहुत बड़ी आवश्यकता है। गांव में अगर कोई गरीब है, गांव का स्वभाव है, गांव उसको संभाल लेता है। लेकिन शहर में कोई किसी को पहचानता नहीं है। फ्लैट में बगल वाले को भी नहीं जानता है। ऐसी स्थिति में एक नए स्वरूप में समाज की चिंता करने की आवश्यकता हुई है। शहरी गरीबों की तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता खड़ी हुई है। और उस दिशा में ये नई सरकार कुछ न कुछ करने के लिए संकल्पबद्ध है।

भाइयों-बहनों, देश भ्रष्टाचार के कारण बहुत परेशान है। भ्रष्टाचार ने देश को तबाह करके रखा है। अगर हम सब तय करें, तो यह भयंकर से भयंकर बीमारी भी जा सकती है। आप मुझे साथ दीजिए भाइयों-बहनों, यह क्यों सहन करें हम ? साठ साल हुए, देश लूटा गया है। और सिर्फ राजनेताओं ने नहीं लूटा है, जिसको भी मौका मिला, सबने लूटा है। और उसके कारण अगर मुसीबत झेलनी पड़ी है तो मध्यम वर्ग, निम्न मध्यम वर्ग के लोगों को झेलनी पड़ी है। जब मैं भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने लगा हूं, तो कुछ राजनीतिक दल बहुत परेशान हो जाते हैं। अब आप मुझे बताइए, मुझे कुछ राजनीतिक दलों की खुशी के लिए काम करना है कि आपकी खुशी के लिए करना है। और इसलिए, भाइयों-बहनों, आपकी खुशी के लिए, देश की प्रगति के लिए, और दुनिया के समृद्ध देशों की बराबरी में हमारा देश भी आ जाए। जिस देश के अंदर 65 प्रतिशत नौजवान 35 साल की उमर के हों, वह देश कभी पीछे नहीं रह सकता भाइयों। यह देश कभी पीछे नहीं रह सकता। अब पीछे रहना भी क्यों चाहिए। क्यों पीछे रहना चाहिए। क्या नहीं है हमारे पास। जिस देश के पास इतना सामर्थ्य है, वह देश दुनिया के काम आए, ऐसी ताकत रख सकता है। और वह स्थिति हमें फिर से पैदा करनी है। इसी सपने को ले कर के आगे बढ़ना है। फिर एक बार नागपुर वासियों को मेरी बहुत बहुत शुभकामनाएं। बहुत ही जल्द मेट्रो

ट्रेन दौड़ने लग जाए, फ्लाईओवर बन जाए, नितिन जी जो बीड़ा उठाया है, वह बीड़ा पूरा हो जाए, इस अपेक्षा के साथ मेरे साथ बोलिये- भारत माता की जय।

ऐसे नहीं, नागपुर में आया हूं, तो दोनों मुट्ठी बंद कर के पूरी ताकत से बोलिये, भारत माता की जय। भारत माता की जय। भारत माता की जय।

अमित कुमार/शिशिर चौरसिया

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

29-नवंबर-2014 23:20 IST

मेंहदीपत्थर, मेघालय से गुवाहाटी के बीच पहली रेल सेवा के मौके पर प्रधानमंत्री के वक्तव्य का मूल पाठ

विशाल संख्या में आए हुए गोवाहाटी के प्यारे भाईयों और बहनों!

रेलवे के इतिहास में आज एक महत्वपूर्ण अवसर है। भारत का एक राज्य आज एक रेल connectivity से जुड़ रहा है। वो अपने आप में, मेघालय का आज Mendipathar से Guwahati तक का रेल रूट प्रारंभ हो रहा है। उसी के साथ-साथ आज रेलवे का एक और भी कार्यक्रम है - Bhairabi से लेकर Sairang - मिजोरम के लिए, रेल की नई योजना के लिए शिलान्यास का भी अवसर है। ये दोनों प्रोजेक्ट - एक रेल प्रारंभ हो रही है और दूसरा रेलवे के लिए शिलान्यास हो रहा है।

हम लोग, जो वास्तुशास्त्र में विश्वास करते हैं - मैं तो उसके विषय में कुछ ज्यादा जानता नहीं हूँ - लेकिन मैंने ऐसा सुना है, कहते हैं कि वास्तुशास्त्र वाले, आपके घर में, कहते हैं कि घर का जो ईशान कोना होता है। ईशान कोने को ठीक ठाक रखो, साफ-सुथरा रखो। अगर एक बार ईशान कोना ठीक रखा, उसकी पवित्रता को संभाला तो घर के अंदर वास्तुशास्त्र की दृष्टि से हमेशा मंगलमय माहौल रहेगा। अब मैं नहीं जानता हूँ कि ये सच कितना है, झूठ कितना है। लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि भारत के इस ईशान कोने को, हमारे North-East को

अगर हम अच्छी तरह से संभाल लें तो पूरा हिंदूस्तान आगे बढ़ जाएगा।

इसलिए, अगर भारत का मंगल करना है, तो हमारे इस ईशान इलाके का भी, North-East part का भी तेज़ गति से भला करना होगा, विकास करना होगा। विकास के अंदर सबसे पहली बात होती है- infrastructure. जो लंबी दूरी की सोच के साथ भव्य सपनों को लेकर जो चलता है, वो विकास की शुरूआत infrastructure से करता है। एक बार infrastructure बन गया तो बाकी चीज़ें जनता अपने आप कर लेती है।

आप में से कई लोग हैं जिन्होंने South Korea का नाम सुना होगा। वो बड़ा प्रदेश नहीं है। वो देश पांच-छः करोड़ की आबादी वाला है। समुद्र के किनारे पर है। बहुत गरीब देश था, बहुत गरीब! यानी हम हिंदुस्तान में जो गरीबी की चर्चा करते हैं, उस से भी ज्यादा गरीब देश था। लेकिन, वहां के एक शासक थे, उनके मन में विचार आया कि कोरिया के बीचोंबीच एक बहुत बड़ा - समृद्ध देशों में होता है - ऐसा हाईवे बना दें, बहुत बड़ा चौड़ा रोड बना दें। पूरे कोरिया में तूफान मच गया- "लोगों को खाना नहीं है, बच्चों को शिक्षा नहीं है, रहने को घर नहीं है और ये कैसा शासक है! इतना बड़ा रोड बनाने जा रहा है, अरबों, खरबों रूपया खर्च कर रहा है!"

लेकिन, वो अपने इरादों को पक्के थे। चारों तरफ उनकी आलोचना हो रही थी, लेकिन उन्होंने उस रोड को बनाया। आलोचना सहते हुए बनाया। लेकिन, उस एक रोड ने पूरे South Korea की ज़िंदगी को बदल दिया।

आज से कई वर्ष पहले, हम इतना बड़ा देश हैं, अभी तीन-चार साल पहले Commonwealth की games का कार्यक्रम हम करना चाहते थे। और दिल्ली का क्या हाल हुआ था, कितनी बदनामी मिली थी, ये सारा देश और दुनिया जानती है। लेकिन South Korea ने आज से करीब 12-15 साल पहले ओलंपिक को host किया था और पूरे विश्व के लोगों को निमंत्रित किया था। इतना वो देश आगे बढ़ गया। गरीबी का नामोनिशान मिटा दिया। एक रास्ता!

कभी-कभी अमेरिका के राष्ट्रपति केनेडी कहा करते थे कि "संपत्ति नहीं है, जिससे रास्ते बनते हैं, ये रास्ते हैं जिससे संपत्ति बनती है"। विकास की अवधारणा में infrastructure एक सबसे बड़ी प्राथमिकता होती है। अगर हमें North-East का विकास करना है, North-East को भारत की विकास यात्रा में भागीदार बनाना है तो ये हमारा जो अष्टलक्ष्मी का इलाका है, हमारे जो आठ राज्य, अष्टलक्ष्मी! ये सच्चे अर्थ में भारत की लक्ष्मी बनने की ताकत रखते हैं।

ये अष्टलक्ष्मी, इनको अगर भारत के infrastructure से जोड़ दिया जाए - जिसमें रोड हो, रेल हो, हर प्रकार की connectivity हो। अगर connectivity में हम सफल हुए - और मैं विश्वास करता हूँ कि होने वाले हैं - पूरा हिंदुस्तान,

आज जो टूरिज्म के लिए, इधर-उधर बेचारा जो जगह खोजता रहता है, जो upper middle class देश में पैदा हुई है, बहुत बड़ी तादात में है, उसको साल में एक बार, दो बार परिवार के साथ कहीं बाहर जाना होता है। अगर अच्छी connectivity North-East को मिल जाए, मैं विश्वास से कहता हूँ- यहां का जो प्राकृतिक सौंदर्य है, हरे भरे जंगल हैं, प्यारे लोग हैं, सारा हिंदुस्तान उमड़ पड़ेगा, सारा हिंदुस्तान!

और इसी सोच के कारण जब हमारी सरकार बनी - अभी तो नई नई सरकार है - हमारी, बजट बनाना था, पहले ही बजट में, इस क्षेत्र में, हमारे North-East के राज्यों को रेलवे से जोड़ने के लिए 28 हजार करोड़ रुपया तय कर लिया। क्योंकि मुझे मालूम है कि एक बार अगर ये व्यवस्था बन गई, ये पूरा क्षेत्र विकास की नई ऊंचाईयों को अपने आप पार कर लेगा। उसी प्रकार, पूरे विश्व में जो विकास का चित्र बन रहा है, सारी दुनिया मानती है कि ये शताब्दी, एशिया की शताब्दी है। और अगर ये शताब्दी एशिया की शताब्दी है तो हमने कोई तैयारी की है क्या? हम Look East policy की बात करते रहे। अब हमने तय किया है अगर एशिया की शताब्दी है और हमें सचमुच में उस परिस्थिति का फायदा उठाना है, आगे बढ़ना है तो भारत ने look east policy को आगे बढ़ाना पड़ेगा, Look East नहीं, Look Act (Act East)! Act करना होगा हमने। Look East policy से Act East policy की ओर हम आगे बढ़ रहे हैं। और हमारी कोशिश ये है कि North-East, रेल से, रोड से म्यांमार से जुड़े, एशिया के और देशों से जुड़े। आप कल्पना कर सकते हैं कि ये भूभाग व्यापार का कितना बड़ा केंद्र बन जाएगा! विकास की कितनी बड़ी अवधारणा पैदा होगी! और फिर North-East के नौजवानों को रोजी रोटी के लिए North-East छोड़ करके - ऑक्सीजन से भरा हुआ इलाका, चारों तरफ हरियाली, पानी ही पानी - ये सब छोड़ करके शहरों में जा करके ज़िंदगी गुज़ारनी नहीं पड़ेगी।

अब वक्त बदल चुका है। अब infrastructure की भी next-generation की सोच को ले करके आगे बढ़ना पड़ेगा। पिछली शताब्दी में रेल, रोड, पोर्ट, एयर पोर्ट - ये काम हो जाता था तो लोग मानते थे कि बस बढ़िया हो गया। अब जगत बदल गया है। अब high ways भी चाहिए, i-ways भी चाहिए। Information ways, i-ways. Digital divide नहीं होना चाहिए।

Digital India का सपना North-East को भी जोड़ने वाला होना चाहिए। i-ways का नेटवर्क हो, connectivity हो। दिल्ली में बैठ करके, मोबाईल फोन पर बैठ करके जो कर सकता है, वो North-East की दुर्गम पहाड़ी पर रहने वाला भी कर पाए, इतनी व्यवस्था मिलनी चाहिए।

दुनिया बदल रही है। गैस ग्रीड क्यों न हो? पीने के पानी की लाइन क्यों न हो? बिजली चौबीस घंटे क्यों न मिले? Optical fiber network क्यों न हो? नए युग के जीवन को ध्यान में रखते हुए infrastructure की ओर आगे बढ़ना है। मेरा विश्वास है कि आधुनिक भारत बनाने के लिए infrastructure के next generation की जो कल्पना है, उसे हमें तेज गति से आगे बढ़ाना है, उसको साकार करना है। अगर एक बार, North-East में भी optical fiber network बराबर लग गया, connectivity बराबर हो गई - यहां के बच्चों की अंग्रेज़ी में पढ़ाई होती है, नोर्थ ईस्ट में - फिर ये जो दुनिया में, बेंगलूर में, हैदराबाद में कंप्यूटर पर बैठ करके job work करते हैं, उनको बेंगलूर, हैदराबाद नहीं जाना पड़ेगा, वो गांव में अपने घर में बैठ कर पाएगा। Call center के लिए दिल्ली, मुंबई में काम करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, वो North-East के कोने में भी हो सकता है। बदल सकती है दुनिया! बदली जा सकती है! इसलिए North-East के विकास की तरफ मैं ज़रा विशेष रुचि ले रहा हूँ।

अभी कुछ दिन पहले मैं म्यांमार गया था। वहां के राष्ट्र के मुखियाओं के साथ भी, हमारी connectivity कैसे बढ़े, व्यापार कैसे बढ़े, इस क्षेत्र के हमारे नौजवानों की शक्ति कैसे काम आए, उस पर मैंने बल दिया है और इसलिए भाईयों बहनो! ये रेलवे का जुड़ना, ये केवल पैसेंजरों के आवागमन का विषय नहीं होता है। रेलवे हमें जोड़ती भी है, रेलवे हमें गति भी देती है, रेलवे हमें एक सामर्थ्य भी देती है। भारत के अंदर रेलवे जैसी व्यवस्था, वो हमारे हिंदुस्तान की आर्थिक गतिविधि की रीढ़ बनने की ताकत रखती है। लेकिन, दुर्भाग्य से आर्थिक विकास की एक उर्जा के रूप में रेलवे को देखने के बजाए हमने रेलवे को उस रूप में ला दिया - Parliament में भी जब रेलवे के बजट की चर्चा होती है, पूरे बजट की चर्चा पर किसी का ध्यान नहीं होता है, न देश में भी किसी का होता है।

लेकिन जैसे ही रेल मंत्री बोलना शुरू करते हैं कि फलानी ट्रेन में एक डिब्बा बढ़ा दिया जाएगा, चारों तरफ तालियों की गूंज शुरू हो जाती है। 'वहां पर एक ट्रेन लंबी कर दी जाएगी', तालियां बज जाती हैं। कहीं कह दिया जाता है कि इस स्टेशन को अपग्रेड कर दिया जाएगा, तालियां बज जाती हैं।

यानी रेलवे को ऐसे टुकड़ों में बांट दिया गया है। एक डिब्बा बढ़ जाए, बस काम हो गया। एक रूट चालू हो जाए, काम हो गया। हमने तय किया है कि इन छोटी, छोटी, छोटी चीज़ों से रेलवे की तालियां बज रही हैं, हम वहीं संतोष मानने वाले

नहीं हैं। हम रेलवे का विस्तार भी बढ़ाना चाहते हैं और उसका आधुनिकरण भी करना चाहते हैं। रेलवे का horizontal विकास भी हो, vertical विकास भी हो। Horizontal विकास का मेरा मतलब है- हिंदुस्तान में कोने कोने जहां रेलवे पहुंचा सकते हैं, रेलवे पहुंचाएं। और vertical का मेरा मतलब है- हमारी सेवाओं को अपग्रेड करें, technology को upgrade करें, स्पीड को बढ़ाएं, समय बचाएं, सुविधाएं बढ़ाएं और सच्चे अर्थ में राष्ट्र के अर्थतंत्र को गति देने वाला, सच्चे अर्थ में रेलवे एक इंजिन बन जाए, उस रूप में रेलवे को ले जाना है।

मुझे विश्वास है कि हमारे नए रेल मंत्री सुरेश प्रभु जी के नेतृत्व में हिंदुस्तान में पिछले सौ साल में जिस गति से रेल आगे बढ़ी है, उस से अनेक गुना ज्यादा गति से रेल का पूरा तंत्र आगे बढ़ेगा, ये मेरा विश्वास है। पहली बार भारत में हमने एक निर्णय किया है। 100 प्रतिशत फोरेन foreign direct investment. सौ प्रतिशत रेलवे के अंदर विदेशी पूंजी का निवेश। लोग आएंगे, धन लगाएंगे, आधुनिक रेल बनेगी, आधुनिक पटरी बनेगी, आधुनिक सिग्नल सिस्टम आएगा, आधुनिक तरीके से टिकट दिया जाएगा। पूरी रेलवे की व्यवस्था को आधुनिक बयार बनाया जा सकता है।

सवा सौ करोड़ का देश, कभी न कभी तो हर व्यक्ति पैसेंजर हुआ करता है, हर यात्री नागरिक भी हुआ करता है। कोई साल में एक बार सफर करता है, तो कोई दिन में एक बार सफर करता होगा लेकिन सफर हर कोई करता है। इतना बड़ा मार्केट, Commercial Market जहां हो, और आज रेलवे environment friendly होती है, eco friendly होती है। Mass Transportation - Global Warming के खिलाफ जो लड़ाई चल रही है, उसमें हमारा एक contribution हो सकता है।

अनेक ऐसे पहलू हैं, जिन पहलुओं को ले करके, रेलवे के माध्यम से हम एक पूरी नई व्यवस्था विकसित करना चाहते हैं। उसी प्रकार से, रेलवे का पूरा काम, एक प्रकार से expertise चाहिए, dedicated technology चाहिए, Technology upgradation चाहिए। और उसके लिए लोग चाहिए। आज रेलवे की हालत ऐसी है कि रेलवे का advertisement आता है, तो लोग अर्जी करते हैं, हमें रेलवे में नौकरी चाहिए। लोग अर्जी करते हैं, फिर रेलवे वाले इंटरव्यू करते हैं और जिसका नंबर लग गया, लग गया। फिर रेलवे वाले उसको सिखाते हैं, कैसे काम करना है।

हमने नया रूप सोचा है और मेरे नौजवान मित्रों को बहुत पसंद आया। हमने कहा है पूरे देश में, चार अलग अलग कोने में, अलग रेलवे की universities बनेंगी। उसमें सारे विषय पढ़ाए जाएंगे, उसके साथ रेलवे संबंधी अध्ययन होगा उसमें ताकि वहां से पढ़कर जो नौजवान निकलेगा, वो तुरंत रेलवे में काम आएगा। रेलवे का भी लाभ होगा, उस नौजवान का भी लाभ होगा।

Human resource development के साथ technology upgradation, व्यवस्था के साथ गति में सुधार, सुविधा के साथ सेवा की गुणवत्ता में परिवर्तन। मुझे बताइए, आज हमारे जो रेलवे स्टेशन हैं, बड़े बड़े शहरों के बीचों बीच बड़े बड़े रेलवे स्टेशन हैं। मीलों तक बड़े शहर के अंदर रेलवे चल रही है और आज जमीन इतनी मंहगी हो गई है। और हमारे रेलवे स्टेशन सौ साल पहले जैसे थे, वैसे ही हैं। कुर्सी वैसी ही, बैठने बेंच ऐसी ही, पैसेंजर जाएगा तो स्थिति ऐसी ही। ये बदला जा सकता है कि नहीं बदला जा सकता? हमने कहा है कि रेलवे स्टेशनों को प्राइवेटाइज करो। नीचे ट्रेन चलती रहे, ऊपर फाइव स्टार, सेवन स्टार हॉटल बना दो। मोटल बना लो। मॉल बना दो। ट्रेन चलती रहेगी, ट्रेन के ऊपर आसमान पूरा खुला पड़ा है, उसमें से इनकम करो और रेलवे को अच्छी करो, ऐसा मैंने उनको समझाया है।

अभी रेलवे ने निर्णय भी कर लिया है - कुछ रेलवे स्टेशनों को आधुनिक बनाने वाले हैं। एयरपोर्ट से रेलवे स्टेशन अच्छा होना चाहिए मेरा मत है - क्योंकि रेलवे स्टेशन पर गरीब से गरीब इंसान जाता है। सामान्य मानव भी जाता है, मजदूर भी जाएगा तो बेचारा रेल से जाएगा। एयरपोर्ट पर अच्छी सुविधा हो, रेलवे पर क्यों न हो? इसलिए पूरे रेलवे स्टेशन की व्यवस्थाएं बदलनी हैं। देखते ही देखते आप देखिए, कुछ मॉडल रूप तो दस-बारह जगह पर मैं करवा दूंगा। और एक बार हो गया तो फिर तो सारे हिंदुस्तान में होने में देर नहीं लगेगी, फिर चल पड़ेगी गाड़ी।

भाईयों, बहनों! रेलवे में अमूल चूल परिवर्तन लाना है। विश्व का पूरा अच्छे से अच्छा काम है, उसमें से जो नई चीज़ें ला सकते हैं हमें लानी हैं। और North-East को रेल connectivity से जोड़ करके। North-East! ये अष्टलक्ष्मी का प्रदेश! भारत की लक्ष्मी बन जाए, भारत का सबसे धनी प्रदेश बन जाए, उस दिशा में हम काम करना चाहते हैं। आप सबके बीच आने का मुझे अवसर मिला। मैं रेलवे के अधिकारियों को शुभकामनाएं देता हूं, बधाई देता हूं। रेलवे विभाग को, मंत्री श्री को बधाई देता हूं कि वे इस काम को संपन्न कर रहे हैं आगे की योजनाओं को तेज़ गति से आगे बढ़ा रहे हैं। मैं मेघालय, मिजोरम की जनता को भी बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूं। उनके मुख्यमंत्री श्री और गवर्नर श्री का हृदय से अभिनंदन करता हूं कि हम सब मिल करके राष्ट्र को नई ऊंचाईयों पर ले जाने के प्रयास में हमारे देश का कोई कोना भी पीछे न रह जाए, उसके लिए विकास की वो अवधारणा को लेकर आगे चलें, विकास वो हो जो सर्वस्पर्शी हो, सार्वदेशिक हो, सर्वपोषक हो, सर्वपूरक हो। ऐसे विकास को आगे बढ़ाने में, सबके योगदान के लिए मैं आभार व्यक्त करता हूं। श्रीमान तरुण जी का

आभार व्यक्त करता हूँ। बहुत बहुत धन्यवाद।

महिमा वशिष्ट / रजनी

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

25-दिसंबर-2014 20:28 IST

डीज़ल लोकोमोटिव वर्क्स के विस्तारीकरण के शुभारंभ पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

उपस्थित सभी महानुभाव और मेरे परिवार के सभी सदस्य, बंधु गण, मैंने ये कहा कि मेरे परिवार के दो कारण से - एक तो मैं बनारस का हो गया हूँ और दूसरा बचपन से एक ही याद रही है, वो है, रेल। इसलिए रेल से जुड़ा हर व्यक्ति मेरे परिवार का सदस्य है और इस अर्थ में मैं परिवार जनों के बीच आज आया हूँ। मुझे खुशी है कि आज यहां दो महत्वपूर्ण प्रकल्प, एक तो 4,500 horse power capacity का डीज़ल इंजिन राष्ट्र को समर्पित हो रहा है और ये हमारी capability है। भारत को आगे बढ़ना है, तो इस बात पर बल देना होगा कि हम, हमारे आत्मबल पर, हमारी शक्ति के आधार पर हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करने का काम करें।

एक समय था, ये देश पेट भरने के लिए अन्न बाहर से लाता था। जब विदेशों से अन्न आता था, तब हमारा पेट भरता था। लेकिन इस देश में एक ऐसे महापुरुष हुए जिसने बेड़ा उठाया, देश के किसानों को ललकारा, आवाहन किया, उनको प्रेरणा दी, जय जवान जय किसान का मंत्र दिया और देश के किसानों ने अन्न के भंडार भर दिए। आज हिंदुस्तान अन्न विदेशों में दे सके, ये ताकत आ गई है। वो काम किया था, इसी धरती के लाल, लाल बहादुर शास्त्री ने। अगर हमारे किसान देश को आत्मनिर्भर बना सकते हैं, अन्न के भंडार भर सकते हैं, तो देश की उस ताकत को पहचान करके हमने देश की उस युवा शक्ति का आवाहन किया है - Make in India! हमारी जितनी आवश्यकताएं हैं, उसका निर्माण देश में क्यों नहीं होना चाहिए? क्या कमी है! जिस देश के पास होनहार नौजवान हों, 65 प्रतिशत 35 साल से कम उम्र के नौजवान हों, वो देश क्या नहीं कर सकता है?

इसलिए भाइयों, बहनों, लाल बहादुर शास्त्री का मंत्र था- जय जवान जय किसान और उन्होंने देश के अन्न के भंडार भर दिए। हम Make in India का मंत्र ले करके आए हैं इंडिजिनस! भारत की विधा से, भारत के संसाधनों से भारत अपनी चीज़ों को बनाए। आज, डिफेंस के क्षेत्र में हर चीज़ हम बाहर से लाते हैं। अश्रु गैस भी बाहर से आता है, बताईए! रोने के लिए भी बाहर से हमको साधन लाने पड़ते हैं। ये बदलना है मुझे और उसमें एक महत्वपूर्ण पहल आज आपके यहां से.. indigenous .. मुझे बताया गया, ये जो इंजिन बना है, इसमें 96% कंपोनेंट यहीं पर बने हैं, आप ही लोगों ने बनाए हैं। मैंने कहा है कि वो 4% भी नहीं आना चाहिए। बताइए कैसे करोगे? उन्होंने कहा- हम बीड़ा उठाते हैं, हम करेंगे। डिफेंस..सब चीज़ें हम बाहर से ला रहे हैं, मोबाइल फोन बाहर से ला रहे हैं, बताईए! हमारे देश में हमें एक वायुमंडल बनाना है और इस पर हम कोशिश कर रहे हैं।

रेलवे! आप ने मुझे, जब से प्रधानमंत्री बना हूँ, बार बार मेरे मुंह से रेलवे के बारे में सुना होगा। घूम फिर करके कहीं भी भाषण करता हूँ तो रेलवे तो आ ही जाता है। एक तो बचपन से आदत है और दूसरा, मेरा स्पष्ट मानना है कि भारत में रेलवे देश को आगे ले जाने की इतनी बड़ी ताकत रखती है, लेकिन हमने उसकी उपेक्षा की है। मेरे लिए रेलवे एक बहुत बड़ी प्राथमिकता है। आप कल्पना कर सकते हो, इतना बड़ा infrastructure! इतनी बड़ी संख्या में manpower! इतना पुराना experience! और विश्व में सर्वाधिक लोगों को ले जाने लाने वाला ये इतना बड़ा organization हमारे पास हो। इसको अगर आधुनिक बनाया जाए, इसको अगर technology upgradation किया जाए, management perfection किया जाए। service oriented बनाया जाए तो क्या हिंदुस्तान की शक्ति सूरत बदलने में रेलवे काम नहीं आ सकती? भाइयों, बहनों मैं ये सपना देख करके काम कर रहा हूँ। इसलिए रेलवे तो आगे बढ़ना ही है, लेकिन रेलवे के माध्यम से मुझे देश को आगे बढ़ाना है। और, अब तक क्या हुआ है, रेल मतलब- दो-पांच किलोमीटर नई पटरी डाल दो, एक आद दो नई ट्रेन चालू कर दो, इसी के आस-पास चला है। हम उसमें आमूल-चूल परिवर्तन चाहते हैं।

उसी प्रकार से human resource development. हम जानते हैं कि रेलवे में अभी भी बहुत लोगों को रोजगार मिलने की संभावनाएं हैं। लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी है कि वे हिम्मत नहीं करते। अगर आर्थिक रूप से उनको मजबूत बनाया जाए तो हजारों नौजवान रेलवे अभी भी absorb कर सकता है, इतनी बड़ी ताकत है। इसलिए योग्य manpower के लिए हम चार युनिवर्सिटी बनाना चाहते हैं, हिंदुस्तान के चार कोनों में। उस युनिवर्सिटी में जो आएंगे उन नौजवानों की शिक्षा दीक्षा होगी और उनको रेलवे के अंदर नौकरी मिलेगी। हमारे कई रेलवे के कर्मचारी हैं। उनकी संतानों को अगर वहां पर पढ़ने का अवसर मिलेगा तो अपने आप रेलवे में नौकरी करने के लिए उसकी सुविधा बढ़ जाएगी। उसको भटकना नहीं

पड़ेगा। कुछ लोग अफवाहें फैलाते हैं। आप में से कई लोग होंगे जो 20 साल की उम्र के बाद, 22 साल की उम्र के बाद, पढ़ाई करने के बाद रेलवे से जुड़े होंगे। मैं जन्म से जुड़ा हुआ हूँ। इसलिए आप लोगों से ज्यादा रेलवे के प्रति मेरा प्यार है, क्योंकि मेरा तो जीवन ही उसके कारण बना है। जो लोग अफवाहें फैला रहे हैं कि रेलवे का privatization हो रहा है, वो सरासर गलत है। मुझ से ज्यादा इस रेलवे को कोई प्यार नहीं कर सकता और इसलिए ये जो गप्प चलाए जा रहे हैं, भाईयों, बहनों न ये हमारी इच्छा है, न इरादा है, न सोच है। हम इस दिशा में कभी जा नहीं सकते, आप चिंता मत कीजिए। हम क्या चाहते हैं - आज देश के गरीबों के लिए जो पैसा काम आना चाहिए, स्कूल बनाने के लिए, अस्पताल बनाने के लिए, रोड बनाने के लिए, गांव के अंदर गरीब आदमी की सुविधा के लिए, उन सरकारी खजाने के पैसे हर साल रेलवे में डालने पड़ते हैं। क्यों? रेलवे को जिंदा रखने के लिए। हम कितने साल तक हिंदुस्तान के गरीबों की तिजोरी से पैसे रेल में डालते रहेंगे? और अगर कहीं और से पैसा मिलता है, तो समझदारी इसमें है कि गरीबों के पैसे रेल में डालने के बजाए, जो धन्ना सेठ हैं, उनके पैसे रेल में डालने चाहिए। इसलिए कम ब्याज से आज दुनिया में पैसे मिलते हैं। हम उन पैसों को रेलवे के विकास के लिए लगाना चाहते हैं, जिसके कारण, आप जो रेलवे में काम कर रहे हैं, उनका भी भला होगा और हिंदुस्तान का भी भला होगा। रेलवे का privatization नहीं होने वाला है।

अब मुझे बताईए, ये युनियन वालों को मैं पूछना चाहता हूँ कि रुपया रेलवे में आए, डालर आए, पाउंड आए, अरे आपको क्या फर्क पड़ता है भई! आपका तो पैसा आ रहा है। दूसरी बात, रेलवे के स्टेशन जितने हैं, हमारे.. अब मुझे बताईए, मुझे रेलवे युनिवर्सिटी बनानी है.. अगर रेलवे युनिवर्सिटी में मुझे जापान से मदद मिलती है, चाइना से मदद मिलती है, टेक्नॉलॉजी की मदद मिलती है, expertise की मदद मिलती है, तो लेनी चाहिए कि नहीं लेनी चाहिए? ज़रा बताईए, सच्चा बोलिए, दिल से बोलिए- लेनी चाहिए कि नहीं लेनी चाहिए? यही काम ये सरकार करना चाहती है भाईयों! और इतना ही नहीं इतना ही नहीं। आज हम देखें हमारे रेलवे स्टेशन कैसे हैं? रेलवे स्टेशन पर रेलवे में 12-12 घंटे प्लेटफार्म पर काम करने वाले रेलवे के कर्मचारी को बैठने के लिए जगह नहीं होती है। ये सच्चाई है कि नहीं है? उसको बेचारे को बैठ करके खाना खाना हो, उसके लिए जगह नहीं है। क्या हमारे रेलवे स्टेशन सुविधा वाले होने चाहिए कि नहीं होने चाहिए? रेलवे पर आने वाले लोगों को सुविधा मिलनी चाहिए कि नहीं मिलनी चाहिए? मैंने सर्वे किया कि बनारस स्टेशन पे जितने पैसंजर आते हैं, उनको बैठने के लिए सीट है क्या? और मैं हैरान हो गया कि बहुत कम सीट हैं। ज्यादातर बेचारे बूढ़े पैसंजर भी घंटों तक रेलवे के इंतज़ार में खड़े रहते हैं। क्या उनको बैठने की सुविधा मिलनी चाहिए कि नहीं मिलनी चाहिए? मैंने क्या किया, मेरे MPLAD का जो फंड था, मैंने रेलवे वालों को कहा, सबसे ज्यादा, जितनी बैंच लगा सकते हो, प्लेटफार्म पर लगाओ ताकि यहां गरीब से गरीब व्यक्ति को रेलवे के इंतज़ार में बैठा है तो उसको बैठने की जगह मिले। और मैंने सभी एमपी को कहा है, हिंदुस्तान भर में सभी रेलवे स्टेशन पर वो अपने MPLAD फंड में से पैसे लगा करके वहां पर वहां पर बैंचें डलवाएं ताकि रेलवे स्टेशन पर आने वाले पैसंजर की सुविधा बढ़े। मुझे बताईए, ये सुविधा बढ़ेगी तो आशीर्वाद आपको मिलेगा कि नहीं मिलेगा? सीधी सीधी बात है, सब आपके फायदे के लिए हो रहा है भई। आप मुझे बताईए आज रेलवे स्टेशन जो हैं बड़े बड़े, heart of the city हैं! दो दो चार किलोमीटर लंबे स्टेशन हैं। नीचे तो आपकी मालिकी मुझे मंज़ूर है लेकिन रेलवे में आसमान में कोई इमारत बना देता है और रेलवे के खजाने में हजार करोड़, दो हजार करोड़ आज जाते हैं तो रेलवे मजबूत बनेगी कि नहीं बनेगी? वो प्लेटफार्म के ऊपर, हवा में, आकाश में अपनी इमारत बनाता है, रेलवे के फायदे में जाएगी कि नहीं जाएगी? मालिकी रेलवे की रहेगी कि नहीं रहेगी? रेलवे के कर्मचारियों का भला होगा कि नहीं होगा? हम जो विकास की दिशा ले करके चल रहे हैं, ये चल रहे हैं, privatization की हमारी दिशा नहीं है। हमें दुनिया भर का धन लाना है, रेलवे में लगाना है। रेलवे को बढ़ाना है, रेलवे को आगे ले जाना है और रेल के माध्यम से देश को आगे ले जाना है। हमारे देश में रेलवे को केवल यातायात का साधन माना गया था, हम रेलवे को देश के आर्थिक विकास की रीढ़ की हड्डी के रूप में देखना चाहते हैं।

इसलिए मेरे भाईयों, बहनों मैं देश भर के रेल कर्मचारियों को आज आग्रह करता हूँ- आइए! हिंदुस्तान में सबसे उत्तम सेवा कहां की तो रेलवे की ये सपने को हम साकार करें। इन दिनों जो स्वच्छता का अभियान हमने चलाया है, कभी-कभार ट्विटर पर खबरें सुनने को मिलती हैं कि साहब मैं पहले भी रेलवे में जाता था अब भी जाता हूँ लेकिन अब जरा डिब्बे साफ-सुथरे नजर आते हैं, सफाई दिखती है देखिए लोगों को कितना संतोष मिलता है, आशीर्वाद मिलता है और ये कोई उपकार नहीं है, हमारी जिम्मेवारी का हिस्सा है। It is a part of our duty. धीरे-धीरे उस दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। हमारा पूरा रेलवे व्यवस्था तंत्र साफ-सुथरा क्यों न हो उसका सबसे ज्यादा लाभ गरीब लोगों को कैसे मिले, मैं तो देख रहा हूँ। रेलवे Infrastructure का उपयोग देश के विकास में इतना हो सकता है जिसकी किसे ने कल्पना नहीं की थी। हमारे देश में पोस्ट ऑफिस का नेटवर्क और रेलवे का नेटवर्क इन दोनों का अगर बुद्धिपूर्वक उपयोग किया जाए तो हमारे देश के ग्रामीण विकास की वह धरोहर बन सकते हैं।

मैं उदाहरण देता हूँ- रेलवे के पास बिजली होती है, कहीं पर भी जाइए रेलवे के पास बिजली का कनेक्शन है। हिंदुस्तान की हर जगह पर। रेलवे के पास Infrastructure है। छोटे-छोटे गांव पर भी, छोटे-छोटे स्टेशन बने हुए हैं, भले ही वहां पर एक ट्रेन आती हो तो भी कोई न कोई वहां बैठा है, कोई न कोई व्यवस्था है। बाकी 24 घंटे वो खाली पड़ा रहता है उसी प्रकार

से पोस्ट ऑफिस गांव-गांव तक उसका नेटवर्क है लेकिन वो पुराने जमाने की चल रही है उसमें बदलाव लाना है ये मैंने तय किया है और बदलाव लाने वाला हूं। अब मुझे बताइए गांव के अंदर जो रेलवे के स्टेशन हैं वहां पर दिन में मुश्किल से एक ट्रेन आती है मेरे हिसाब से हजारों की तादाद में ऐसी जगहें हैं, जहां बिजली हो, जहां Infrastructure हो वहीं पर अगर एक-दो कमरे और बना दिए जाएं और उन कमरों में Skill Development की Classes शुरू की जाएं क्योंकि Skill Development करना है तो Machine tools चाहिए और Machine tools के लिए बिजली चाहिए लेकिन बिजली गांव में नहीं है लेकिन रेलवे स्टेशन पर है, गांव के बच्चे Daily रेलवे स्टेशन पर आएंगे और रेलवे स्टेशन पर जो दो कमरे बने हुए होंगे उनमें जो Tools लगे हुए होंगे। Turner, Fitter के Course चलेंगे। एक साथ हिंदुस्तान में Extra पैसे खर्च किए बिना रेलवे की मदद से देश में हजारों की तादाद में Skill Development Centres खड़े हो सकते हैं कि नहीं।

मेरे भाईयों-बहनों थोड़ा दिमाग का उपयोग करने की जरूरत है, आप देखिए चीजें बदलने वाली हैं। मैं रेलवे के मित्रों से कहना चाहता हूं ऐसे स्टेशनों को Identify कीजिए जहां पर बिजली की सुविधा है वहां पर सरकार अपने खर्चे से दो-तीन कमरे और बना दे और वहां पर उस इलाके के जो 500-1000 बच्चे हो उनके लिए Skill Development के Institutions चलें। ट्रेन ट्रेन का और Institutions, Institutions का काम करें रेलवे को Income हो जाए और गांव के बच्चों का Skill Development हो जाए। एक साथ हम अनेक व्यवस्थाएं विकसित कर सकते हैं और उस दिशा में हम आगे बढ़ना चाहते हैं।

आज एक तो सोलर प्लांट भी इसके साथ जुड़ रहा है। आधुनिक Loco shed का Expansion हो रहा है, करीब 300 करोड़ रुपए जब पूरा होगा। 300 करोड़ रुपए की लागत से यहाँ Expansion होने के कारण इस क्षेत्र के अनेक नौजवानों को रोजगार की नई संभावनाएं बढ़ने वाली हैं।

मैं फिर एक बार रेल विभाग को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। श्रीमान सुरेश प्रभु जी के नेतृत्व में बहुत तेज गति से रेल का विकास होगा। आजादी के बाद जितना विकास हुआ है उससे ज्यादा विकास मुझे आने वाले दिनों में करना है। रेलवे के बैठे सभी मेरे साथियों आप सभी मेरे परिवारजन हैं और इसलिए मेरा आप पर हक बनता है, रेलवे वालों पर मेरा सबसे ज्यादा हक बनता है कि हम सब मिलकर के रेल को सेवा का एक बहुत बड़ा माध्यम बनाएं, सुविधा का माध्यम बनाएं और राष्ट्र की आर्थिक गति को तेज करने का एक माध्यम बना दें। उस विश्वास के साथ आगे बढ़ें, इसी एक अपेक्षा के साथ आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद.

महिमा वशिष्ठ / रजनी / हरीश जैन / मुस्तकीम खान